International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 9 Issue 10 Ser. II || October 2020 || PP 75-78

राजनीति में अभिजन या विषिष्ट वर्ग की अवधारणा

डॉ0 राधिका देवी
विभागाध्यक्ष(राजनीति विज्ञान)
ए0के0पी0(पी0जी0) कॉलिज, खुर्जा
जिला–बुलन्दषहर (उ0प्र0)

"कोई भी राज–व्यवस्था अपने आपको प्रजातान्त्रिक बतलाने की चाहे कितनी ही चेष्टा क्यों न करें, उसके संगठन में वर्गवादी तत्व विद्यमान होते ही हैं.....व्यक्ति सोच सकते हैं कि वे राजनीतिक प्रक्रिया में भाग ले रहे हैं, लेकिन वास्तव में उनका प्रभाव चुनाव तक ही सीमित रहता है। सत्ता के केन्द्र में एक सामाजिक विशिष्ट वर्ग होता है, जो कि महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।"[1]

–डगलस वी. वर्ने

सर्वाधिकारवादी, कुलीनतन्त्रीय, वर्गवादी और इस श्रेणी की अन्य राज्यव्यवस्थाएं तो मानव मात्र की असमानता पर ही आधारित हैं, लेकिन लोकतन्त्रीय राज–व्यवस्था को मानव मात्र की समानता पर आधारित समझा जाता है, लेकिन वस्तुतः यह स्थिति सिद्धान्त में ही हैं, व्यवहार में नहीं। किसी भी राज–व्यवस्था में सभी व्यक्तियों के समान प्रभाव और महत्व की बात केवल शब्दों में ही हो सकती हैं, वस्तुतः नहीं। यदि हम यूनानी गणराज्यों की प्रत्यक्ष लोकतन्त्रीय राज–व्यवस्था को भी लें, तो उसमें वे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होते थे जो अपनी बात को अन्य की अपेक्षा प्रभावपूर्ण ढंग से कह सकते थे और जिनकी योग्यता, बुद्धि, वंश, आर्थिक तथा सैनिक शक्ति की अन्य व्यक्तियों पर धाक होती थी। वर्तमान जब इनमें प्रत्यक्ष लोकतन्त्र को छोड़कर प्रतिनिध्यात्मक लोकतन्त्रीय व्यवस्था को अपना लिया है तो स्वाभाविक रूप से राजनीति में कुछ भी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण और कुछ की कम महत्वपूर्ण हो जाती है। कुछ व्यक्तियों का कार्य वर्षों में एक बार मतपत्र का प्रयोग करने से ही समाप्त हो जाता है, कुछ व्यक्ति इसके अलावा उम्मीदवारों और राजनीतिक दलों के प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष एजेण्ट के रूप में भी कार्य करते हैं और अन्य कुछ व्यक्ति स्वयं सत्ता के आकांक्षी होते हुए सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। राजनीति के अन्तर्गत जिन्हें सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त होती है, वे ही राजनीतिक अभिजन है। यदि हम राजनीतिक स्थिति और राजनीतिक प्रक्रियाओं को सही रूप में समझना चाहते हैं, तो इन 'राजनीतिक अभिजन' का अध्ययन बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो जाता हैं क्योंकि ये ही वे व्यक्ति हैं जिनके द्वारा राजनीतिक प्रक्रियाओं को सम्पादित किया जाता है।[2] 'अभिजन' के बारे में इसके अध्ययन के महत्व के सम्बन्ध में **हैराल्ड डी.लासवेल**ने लिखा है कि "**इस समय तक इस विचार को सर्वत्र मान्यता प्राप्त हो गयी कि राजनीतिक प्रक्रियाओं की सभी गम्भीर गवेषणाओं में 'शक्ति अभिजन' का व्यापक अध्ययन अवश्यम्भावी है। यदि हम परिवर्तन की गति को समझने के लिए भूतकाल का अध्ययन करते हैं, तो अभिजन से सम्बन्धित सामग्री की अवहेलना अविचारणीय है। यदि हमारा प्रमुख उद्देष्य शक्ति संघर्ष के मुख्य तत्वों को सामने रखना है तो अभिजन के अध्ययन को टाला ही नहीं जा सकता। यदि कोई अध्ययनकर्ता राजनीतिक मुठभेड़ों के स्थान और गति का मूल्यांकन करने के लिए भविष्य की ओर देखता है तो उसे अभिजन सम्बन्धी सामग्री के महत्व को समझना ही होगा।"[3]**

अभिजन : धारणा का विकास और व्याख्या
(EVOLUTION OF THE CONCEPT OF ELITE AND IT'S MEANING)

'अभिजन' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 17वीं सदी में विशेष श्रेष्ठता वाली वस्तुओं का वर्णन करने के लिए किया गया और बाद में इस शब्द का प्रयोग उच्च सामाजिक समुदायों जैसे शक्तिशाली सैनिक इकाइयों और उच्च श्रेणी के सामन्त वर्ग के लिए किया जाने लगा। ऑक्सफोर्ड इंगलिश शब्दकोश में इस शब्द का प्रथम प्रयोग 1823ई. में हुआ, लेकिन इस शब्द का ब्रिटेन और अमरीका में अधिक प्रयोग 1930ई. के बाद ही किया गया, जबकि **विल्फ्रेड पेरेटो** द्वारा प्रतिपादित समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों में अभिजन के विचार का अधिक से अधिक प्रसार हुआ। पैरेटो के बाद **मोस्का, मेरी कोलाबिन्सका, एच.डी. लासवेल, सी.राइट मिल्स, टी.बी. बोटोमोर, कार्ल मैनहम** और **शुम्पीटर,** आदि के द्वारा अभिजन की धारणा पर अपने विचार व्यक्त किये गये।

अभिजन की धारणा विभिन्न व्यक्तियों की क्षमताओं में असमानता पर आधारित है और पैरेटो के अनुसार, **"वे व्यक्ति जो अपने कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत सबसे अधिक उच्च श्रेणी पर हैं, वे ही अभिजन हैं।"** पैरेटो प्राकृतिक मानवीय असमानताओं के आधार पर मानव समाज को दो वर्गों में बांटता है :**(1) अभिजन, तथा (2) अभिजनेतर** अभिजन को उसने पुनः दो भागों में विभाजित किया है : **(1) शासक अभिजन**(Governing Elite), और **(2) अषासक अभिजन** (Non-Governing Elite)! यह विभाजन उसे बुद्धि, संगीत, गणित, आदि विषयों के प्रति अभिरूचि, चरित्र, सामाजिक एवं

राजनीतिक प्रभाव की शक्ति, आदि आधारों पर किया है। पैरेटो कट्टर अभिजनवादी (Elistist)था और यह अभिजन वर्ग का अस्तित्व सामाजिक सन्तुलन को बनाये रखने के लिए आवश्यक मानता था। पैरेटो के समस्त विचार का केन्द्र बिन्दु **'शासक अभिजन'** ही है।

मोस्का ने अभिजन तथा अभिजनेतर जनता के मध्य सुव्यवस्थित सम्बन्ध स्थापित करते हुए एक नवीन राजनीतिक धारणा के प्रतिपादन का प्रयत्न किया।उसने समाज के दो वर्ग बतलायें। **शासक वर्ग**(Ruling Class)**और शासित वर्ग**। शासक वर्ग संख्या में कम, अपेक्षाकृत श्रेष्ठ, संगठित तथा अपने गुणों के कारण समाज द्वारा सम्मानित होता है। यह स्वयं अनेक सामाजिक समूहों से निर्मित होता है। उसने अपने शासक वर्ग को **'शासक अभिजन' या 'राजनीतिक वर्ग'** कहा है। इसके अन्तर्गत वे व्यक्ति होते हैं जो राजनीतिक आदेश के पद को धारण करते हैं या जो प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं। इस विशिष्ट वर्ग की सदस्यता समय–समय पर बदलती रहती है। समाज के निम्न वर्गों से नवीन व्यक्ति इसमें सम्मिलित होते रहते हैं और कभी–कभी विद्यमान विशिष्ट वर्ग के स्थान पर क्रान्ति के माध्यम से पूर्णतया एक नवीन विशिष्ट वर्ग आता है। मोस्का ने शासक वर्ग के, अधिक व्यापक उपशासक वर्गों के साथ सम्बन्धों पर प्रकाश डाला हैं जिसमें नवीन मध्यम वर्ग के सभी सदस्य सरकारी कर्मचारी, वैज्ञानिक, अभियन्ता और बुद्धिजीवी, आदि आ जाते हैं। इस दृष्टि से, **'मोस्का की शासक अभिजन' की धारणा पैरेटो की तुलना में व्यापक लेकिन साथ ही कुछ अस्पष्ट भी है।**

पैरेटो और मोस्का की धारणा में एक अन्तर अभिजन और प्रजातन्त्र के पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में है। पैरेटो का विचार है कि प्रत्येक समाज में शासक और शासित दो अलग वर्ग होते हैं और वह इस बात को अस्वीकार करता है कि इस दृष्टि से प्रजातन्त्रीय राज–व्यवस्था अन्य राज्य–व्यवस्थाओं से भिन्न होती है। मोस्का का विचार है कि इस दृष्टि से प्रजातन्त्रीय राज–व्यवस्था अन्य व्यवस्थाओं से भिन्न होती है क्योंकि प्रजातन्त्र में शासक अल्पसंख्यक व शेष समाज के बीच क्रिया–प्रतिक्रिया होती रहती है।

अभिजन के सम्बन्ध में आगे जो अध्ययन किये गये उनमें एच.डी.लासवेल का अध्ययन निश्चित रूप से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। लासवेल, पैरेटो और मोस्का, विशेष रूप से मोस्का का अनुगमन करते है। लासवेल का मानना है कि **''एक राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत शक्ति को धारण करने वाला वर्ग ही राजनीतिक अभिजन होता है। शक्ति धारण करने वाले वर्ग में नेतृत्व करने वाला वर्ग तथा वह सामाजिक समुदाय आते हैं जिसमें से यह वर्ग आता है और जिसके प्रति एक निर्दिष्ट समय में यह उत्तरदायी होता है।''**[4]

इस प्रकार लासवेल ने राजनीतिक अभिजन को अन्य अभिजन वर्गों से अलग किया है जो शक्ति के प्रयोग से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित नहीं हैं यद्यपि उनका पर्याप्त सामाजिक प्रभाव हो सकता है। राजनीतिक वर्ग (Political Class)राजनीतिक अभिजन (Political Elite)से अधिक व्यापक है, क्योंकि उसमें राजनीतिक अभिजन, राजनीतिक प्रति अभिजन (Counter-Elite)सामाजिक हितों, वर्गों या व्यापार समूहों के प्रतिनिधि, राजनीति में सक्रिय बुद्धिजीवी, आदि भी शामिल होते हैं। ये सभी राजनीतिक, सहयोग, प्रतिक्ष्द्वन्द्विता या प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। इनमें से राजनीतिक अभिजन वह समूह होता है जो एक विशेष समय पर शक्ति का वास्तविक रूप में प्रयोग करता है। इस वर्ग को पहचानना सरल होता है। यह वर्ग प्रायः उच्च प्रशासकीय अधिकारियों, सैनिक अधिकारियों, उच्च कुलीन परिवारों, प्रभावशाली राजनेताओं व उद्योगपतियों, आदि से मिलकर बनता है।

अभिजन के अन्य प्रमुख लेखक **सी.राइट मिल्स**(C. Wright Mills) ने 'शासक–वर्ग' शब्द को उचित न मानकर उसके स्थान पर **'शक्ति अभिजन'**(Power Elite) शब्द का प्रयोग किया है। वह शक्ति शब्द में आर्थिक, राजनीतिक तथा सैनिक धारणाओं को मिलाकर 'शक्ति अभिजन' शब्द गढ़ता है। यह वर्ग सामाजिक दृष्टि से उच्च स्तरीय, सामंज्यपूर्ण, एकता युक्त तथा लोक नियन्त्रण को अस्वीकार करने वाला होता है। उनका मानना है कि **''हम शक्ति की व्याख्या शक्ति के साधन रूप में कर सकते हैं। शक्ति अभिजन वे है जो आदेश देने वाले पदों को धारण करते हैं।''**[5]

अभिजन की धारणा का कुछ और विस्तार से प्रतिपादन **टी.बी.बॉटोमोर** के द्वारा किया गया है।[6] बॉटोमोर के अनुसार अभिजन या शासक वर्ग की अवधारणा ऐतिहासिक परिस्थितियों में सामन्तवाद के अन्त तथा आधुनिक पूंजीवाद के प्रारम्भ की देने है। उस समय से ही यह वर्ग समाज की अधिकांश सम्पत्ति तथा राष्ट्रीय आय के बड़े भाग का प्राप्तकर्ता एवं स्वामी बन बैठा है। इन आर्थिक लाभों को बनाये रखने के लिए वह एक विशिष्ट संस्कृति तथा जीवन दर्शन के निर्माण में भी सफल हो गया है।

राजनीतिक अभिजन प्रबल राजनीतिक प्रभावयुक्त राजनेताओं की सामूहिकता का नाम है। ये किसी समुदाय के लघु अल्पसंख्यक होते हैं जो महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों, प्रभावशाली सामाजिक वर्गों या प्रजातियों की सदस्यता, आर्थिक या सामाजिक समूह में अपनी समाज शैक्षणिक पृष्ठभूमि, आदि के आधार पर राजनीतिक क्षेत्रों में प्रबल प्रभाव रखते हैं। इनके पास बड़ी मात्रा में राजनीतिक साधन होते हैं जिनका प्रयोग वे वांछित राजनीतिक परिणामों को प्राप्त करने के लिए करते हैं। ये राजनीतिक साधन नेतृत्व, कौशल, राजनीतिक पद और विशेष राजनीतिक सूचनाओं की प्राप्ति, आदि के रूप में हो सकते हैं। सत्तारूढ़ राजनेताओं के पास औचित्यपूर्ण सत्ता, दण्ड एवं पुरस्कार, सम्मान, दल, मित्र, शास्तियां (Sanctions) आदि अनेक साधन होते हैं। वे राजनीतिक सामग्री जैसे धन और कर्मचारीगण, आदि के माध्यम से स्वपक्ष, आदि में बहुमत को प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार अभिजन पर विचार करते हुए ये सभी विचारक **अभिजनों को एक ऐसा संगठित अल्पसंख्यक शासक वर्ग मानते हैं जो असंगठित प्रजा वर्ग पर अपनी प्रभुता शक्ति का प्रयोग करता है।** अभिजन की धारणा में एक प्रमुख विचार यह है कि अभिजन परिवर्तित होते रहते हैं।

राजनीतिक अभिजन का वर्गतन्त्रीय या कुलीनतन्त्रीय व्यवस्था में भेद–राजनीतिक अभिजन संगठित अल्पसंख्यक शासक वर्ग का नाम है और वर्गतन्त्रीय या (Oilarchical)या कुलीनतन्त्रीय व्यवस्था में भी कुछ व्यक्तियों का शासन होता है, लेकिन राजनीतिक अभिजन की धारणा को कुलतन्त्रीय या वर्गतन्त्र के समान नहीं समझ लिया जाना चाहिए। इस तथ्य के बावजूद के विशिष्ट वर्ग के शासन में कुछ मूलभूत कुलीनतन्त्र या वर्गवादी व्यवस्था के तत्व होते हैं, इनमें महत्वपूर्ण अन्तर है। निहित हितों की रक्षा और वृद्धि कुलीनतन्त्रीय या वर्गवादी व्यवस्था के समान ही अभिजन वर्ग के शासन का भी एक महत्वपूर्ण तत्व होता है, लेकिन इनमें भेद इस तथ्य में देखा जा सकता है कि अभिजन वर्ग के शासन में वह परम्परागत भव्यता या स्वयं को स्थायित्व प्रदान करने की प्रवृति नहीं होती, जो कुलीनतन्त्र या वर्गतन्त्र के सबसे प्रमुख तत्व हैं।[7]

राजनीतिक अभिजन में 'निरन्तर परिवर्तन' (Cirulation of Elites) होता रहता है। और यही बात राजनीतिक अभिजन को कुलीनतन्त्र एवं वर्गतन्त्र से अलग कर देती है। कुलीनतन्त्र या वर्गतन्त्र अरस्तू की इस मान्यता पर आधारित है कि ''जन्म की घड़ी से ही कुछ लोग शासक होने के लिए और अन्य शासित होने के लिए निश्चित होते हैं।''[8] लेकिन अभिजन की धारणा का मूल विचार यह है कि अभिजन की स्थिति को योग्यता के आधार पर किसी के भी द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

अभिजन की विशेषताएं
(CHARACTERISTICS OF THE CONCEPT OF ELITE)

अभिजन समाज का एक विशिष्ट वर्ग होता हैं जिसका कार्य आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज को नेतृत्व प्रदान करना होता है। **मोस्का** ने अपनी रचना *''The Ruling Elite''*सी.राइट मिल्स ने *''The Power Elite''* और **टी.बी. बॉटोमोर ने***''Elites and Society''*में अभिजन वर्ग का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। इन रचनाओं के आधार पर अभिजन वर्ग की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है, जो निम्न प्रकार हैं :

● **अल्पसंख्यक उच्च वर्ग–** समानता प्राणी मात्र की आकांक्षा, लेकिन असमानता प्रकृति का नियम है। समाज में कुछ व्यक्ति अधिक विद्या, बुद्धि, योग्यता और साधन–सम्पत्र होते हैं जबकि अधिकांश व्यक्ति अपेक्षाकृत अल्प मात्रा में ही इनके स्वामी होते हैं। किसी भी राज–व्यवस्था में सभी व्यक्तियों के समाज महत्व की बात केवल शब्दों में ही हो सकती है, वास्तविकता में नहीं। लोकतन्त्र में भी राज–व्यवस्था पर वास्तविक रूप में नियन्त्रण इस अल्पसंख्यक उच्च वर्ग का ही होता है और यही अभिजन है। अन्य किसी भी शासन व्यवस्था तक लोकतन्त्र में अभिजन वर्ग की स्थिति में यही अन्तर होता है कि लोकतन्त्र में अभिजन वर्ग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सामान्य जन का नियन्त्रण होता है और सामान्य जन के द्वारा अभिजन वर्ग में परिवर्तन किया जा सकता है, लेकिन अन्य शासन व्यवस्थाओं में अभिजन वर्ग पर सामान्य जनता का नियन्त्रण सम्भव नहीं हो पाता।

● **विषिष्ट महत्व–** सभी राज–व्यवस्थाओं में अभिजन वर्ग को विशिष्ट महत्व प्राप्त होता है। अभिजन वर्ग देश की राजनीतिक दिशा निश्चित करता है और यह भी निर्णय करता है कि किन उपायों को अपनाकर इस लक्ष्य को प्राप्त किया जाएगा। अभिजन वर्ग सत्ता के केन्द्र में स्थित होता है और सामान्य जनता भी चाहती है कि अभिजन वर्ग को यह विशिष्ट स्थिति प्राप्त रहे। सामान्य जनता सोचती है कि अभिजन वर्ग की यह विशिष्ट स्थिति उनके हितों की रक्षा और वृद्धि में सहायक होगी। इसके अतिरिक्त इससे उन्हें एक मनोवैज्ञानिक सन्तुष्टि भी प्राप्त होती है।

● **विषिष्ट हित–** अभिजन वर्ग का जीवन के प्रति सामान्य जनता से अलग रूप में अपना एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है। सामान्य जनता की तुलना में उनकी भौतिक और मानसिक आवश्यकताएं अधिक होती हैं और यही उनके विशिष्ट हितों को जन्म देती है। अभिजन वर्ग और सामान्य जनता के हितों में अन्तर तो होगा ही, लेकिन इन दोनों के हितों में ऐसा अन्तर नहीं होना चाहिए जिसे समाप्त नहीं किया जा सकता हो।

● **अभिजन वर्ग में परिवर्तन–** अभिजन वर्ग में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। वर्तमान समय में जो अभिजन वर्ग है, उसका विरोध करने के लिए 'प्रति अभिजन' का जन्म होता है यह 'प्रति अभिजन' स्वयं के लिए शासक अभिजन की स्थिति प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है और जब इसे सफलता प्राप्त हो जाती है तो इससे अभिजन वर्ग में परिवर्तन हो जाता है। अभिजन वर्ग में परिवर्तन सभी शासन व्यवस्थाओं में होते हैं अन्तर केवल यह है कि लोकतन्त्र में तो चुनाव के रूप में अभिजन वर्ग में परिवर्तन का एक संवैधानिक मार्ग होता है, लेकिन अन्य शासन व्यवस्थाओं में क्रान्ति और बल प्रयोग के आधार पर अभिजन वर्ग में परिवर्तन होता है।[9]

❖❖❖

संदर्भ सूची :–

1& "However much one may try to be democratic in one's political system, there is a strong element of oligarchy in every organization……The people may think that they may participate in the political process but in reality, so the argument runs their influence is largely confined to elections. At the centre of power, there is in being a social elite, which wields considerable influence.

-Douglas V. Verney : An Analysis of Political Sysytems.

2- Dr. B.L. Fadia & Dr. Pukhraj Jain, Modern Political Theory, p-161.

3- H.D. Lasswell in Lasswell and Learner edited "World Revolutionary Elites, Studies in coercive Ideological Movement, p.4.

4- "The political elite comprises the power holders of a body politic. The power holders include the leadership the social formations from which leaders typically come, and to which accountability is maintained during a given period."

-H.D. Lasswell in Lasswell Learner and Rothwellis.,
The Comparative Study of Politics.".

5- "We may define the power elite in terms of the means of power as those who occupy the command posts."

-Wright Mills Quoted from J.H. Meisel's The Myth of the Ruling Class, p.23.

6- T.B. Bottomore : Elites and Society; Penguin Books (1964).

7- Douglas V. Verney : An Analysis of Political Sysytems, p. 161.

8- "From the hour of their birth, someare marked out for subjection and some for command".
-Aristotle

9- Dr. B.L. Fadia & Dr. Pukhraj Jain, Modern Political Theory, p-165.